खेल में कोचिंग और पढ़ाई साथ कर सकते हैं बच्चे

देश में खेलों के विकास और उसकी देख-रेख का जिम्मा युवा मामले और खेल मंत्रालय के अधीन आता है। मंत्रालय टैलेंट सर्च और ट्रेनिंग की अनेक योजनाएं चलाने के साथ ही खिलाड़ियों को वित्तीय सहायता भी उपलब्ध कराता है।

जितने बड़े पैमाने पर खेलों के लिए काम हो रहा है उसके लिए बड़ी संख्या में मानव संसाधन की आवश्यकता होती है। खासकर स्पोर्ट्स साइंस और स्पोर्ट्स मेडिसिन के क्षेत्र में तो दक्ष लोगों की भारी कमी है। ओलिंपिक, एशियाड, कॉमनवेल्थ में भाग लेने वाले खिलाड़ियों और टीमों के चयन से लेकर उनको सुविधाएं देने का काम भारतीय ओलिंपिक संघ (आईओए) देखता है। आईओए खेल मंत्रालय से मान्यता प्राप्त संस्था है।

• भारत में क्रिकेट के प्रति लोगों की दीवानगी हद से ज्यादा है। बीसीसीआई ही देश में रणजी और दलीप ट्रॉफी से लेकर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन कराता है। इनमें अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को ही नेशनल टीम में स्थान मिलता है।

• फुटबॉल फेडरेशन देश में फुटबॉल के सभी बड़े टूर्नामेंट का आयोजन करता है। साई में भी इसके लिए कोच होते हैं।

• भारतीय हॉकी फेडरेशन देश में हॉकी से जुड़े टूर्नामेंट का संचालन करती है। हाल ही में हॉकी प्रीमियर लीग भी शुरू हुई है।

• इसी तरह टेनिस के लिए ऑल इंडिया टेनिस एसोसिएशन व निशानेबाजी के लिए नेशनल रायफल एसोसिएशन है। इसी तरह अन्य खेलों के भी अपने-अपने संगठन हैं, जो उनका संचालन करते हैं।

• आज यह जानना जरूरी है कि आप खेलों के साथ ही अपनी पढ़ाई को भी जारी रख सकते हैं। खास तौर पर स्कूली पढ़ाई को पूरा करने के बाद ही आप विशेषज्ञता वाले कोर्स कर सकते हैं। अलग-अलग आयुवर्ग में खेलों में प्रवेश और छात्रवृत्ति पाने के आपके पास मौके होते हैं।

खेलों की संचालन संस्थाएं

• 9-12 वर्ष- इस उम्र के बच्चे नेशनल स्पोर्ट्स टैलेंट स्कीम के तहत होने वाले टेस्ट को पास करके स्वीमिंग, एथलेटिक्स, जिमनास्टिक, टेनिस, हॉकी, बास्केटबॉल, बॉलीबॉल, बैडमिंटन और कुश्ती जैसे खेलों के लिए साई में प्रशिक्षण पा सकते हैं। चयनित बच्चे संबंधित खेल में प्रशिक्षण के साथ ही साई द्वारा अनुमोदित स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा भी हासिल कर सकते हैं। इन बच्चों के स्कूल फीस से लेकर रहने-खाने समेत सभी खर्च सरकार उठाती है।

• 16-20 वर्ष- इस आयु वर्ग के छात्र प्रायोजित संस्थानों में हॉस्टल योजनाओं से फायदा ले सकते हैं। देश में टैलेंट की पहचान और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए विशेष क्षेत्र खेल योजनाएं भी चलाई जाती हैं।

• सेना के रेजीमेंटल ट्रेनिंग सेंटरों के स्कूलों में आसपास के ऐसे छात्रों को लिया जाता है, जिनकी खेल में रुचि होती है। यहां पढ़ाई के साथ खेल और मिलिट्री ट्रेनिंग भी दी जाती है।

• कॉलेज और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले ऐसे विद्यार्थी जो नेशनल चैंपियनशिप और अंतरविश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेते हैं, वे स्पोर्ट्स टैलेंट स्कॉलरशिप के लिए पात्र होते हैं। योग्यता के आधार पर इसके लिए चयन होता है।

• साई के छह रीजनल केंद्रों पर हॉकी, क्रिकेट, बैडमिंटन और टेनिस जैसे सभी पॉपुलर खेलों के लिए कोचिंग सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। एक विद्यार्थी इनमें से किसी भी खेल में कॅरियर का चयन कर सकता है।

अध्यापक करेंगे बच्चों की आंखों की जांच, बताएंगे नजर तिरछी है या खराब

बालाघाट। नईदुनिया प्रतिनिधि

शिक्षा व स्वास्थ्य विभाग चलाएगा संयुक्त कार्यक्रम

जिले के स्कूलों के प्राचार्यों को निर्देश जारी

बच्चों की सीखने की क्षमता आंखों पर निर्भर है। बच्चों के बौद्धिक, व्यवहारिक, शारीरिक विकास को आकार देने में दृष्टि बहुत आवश्यक है । किसी भी प्रकार का दृष्टि दोष बच्चे की परिपक्वता एवं सूझ बूझ में रुकावट डालता है। इसी उद्देश्य को लेकर बच्चों में दृष्टिदोष को रोकने के लिए शिक्षा विभाग वस्वास्थ्य विभाग एक संयुक्त कार्यक्रम चलाता है। जिसमें विद्यालय स्तर पर बच्चों का नेत्र परीक्षण प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा कम दृष्टि वाले बच्चों को चिनहित किया जाता है।

सीएमएचओ डॉ. आरसी पनिका ने बताया कि आंखे हमारी ज्ञानेंद्रियों में सबसे मूल्यवान है। कम दिखाई देना दृष्टिदोष के दायरे में आता है। कम दिखाई देना अर्थात अंधापन दो कारणों से होता है। सबसे बड़ा कारण मोतियाबिंद है, जो कि 60 प्रतिशत है। इसमें आंख का पारदर्शी लेंस अपारदर्शी हो जाता है। यह लेंस ऑपरेशन से ठीक हो जाता है एवं दृष्टि पुन: वापस आ जाती है कम दिखाई देने का दूसरा बड़ा कारण है दृष्टिदोष जो किसी भी उम्र में हो सकता है। जिसका प्रतिशत 5 से 7 है। दृष्टिदोष आमतौर पर चश्में की जांच कर उपयुक्त नंबर का चश्मा पहन कर अंधेपन को नियंत्रित किया जा सकता है ।

उन्होंने बताया कि नेत्र परीक्षण ई टाइप के चार्ट से किया जाता है। परीक्षण के दौरान पांच प्रमुख बातों का विशेष ध्यान रखा जाता है। अध्यापक एवं छात्र के बीच का अंतर 20 फीट या 6 मीटर हो, उपयुक्त प्रकाश में स्नेलेंस चार्ट के ई-टाइप अक्षरों को 20 फीट की दूरी से उसके खुले सिरे यानी दिशाओं के बारे में पूछा जाता है, नहीं बताने पर उसकी नजर कम मानी जाती है। दोनों आंख का अलग-अलग नेत्र परीक्षण किया जाता है। चार्ट व आंख का लेबल एक जैसा होना चाहिए।

नेत्र परीक्षण के दौरान एक साथ सभी बच्चों का परीक्षण नहीं करना है। कम दृष्टि वाले बच्चों की जांच ब्लॉक स्तर पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में टाइम टेबल अनुसार की जाएगी। उसके बाद चश्मा का वितरण किया जाएगा। जिले के समस्त स्कूलों के प्राचार्य को जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा इस संबंध में निर्देश जारी कर दिए गए है।